आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि–2 जून 2014

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,115
युगाब्द-5115, अंक-84-72, वर्ष-7,
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, जून -2014
शुल्क- 5/ रुपये प्रति, द्विवार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि : 5-6 जून, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्रः 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com

संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥-ऋ० १। ६। १६। ५

व्याख्यान–हे त्रैकाल्याबाध्येश्वर! (अदितिर्द्यौः) आप सदैव विनाशरहित तथा स्वप्रकाशरूप हो। (अदितिरन्तरिक्षम्) अविकृत-विकार को न प्राप्त, और सबके अधिष्ठाता हो (अदितिर्माता) आप प्राप्त-मोक्ष जीवों को अविनश्वर (विनाश-रहित) सुख देने और अत्यन्त मान करनेवाले हो। (स पिता) सो अविनाशीस्वरूप हम सब लोगों के पिता (जनक) और पालक हो और (स पुत्रः) सो ईश्वर आप मुमुक्षु, धर्मात्मा और विद्वानों को नरकादि दुःखों से पवित्र और त्राण (रक्षण) करनेवाले हो। (विश्वे देवा अदितिः) सब देव-दिव्यगुण विश्व का धारण रचन, मारण, पालन आदि कार्यों को करनेवाले अविनाशी परमात्मा आप ही हैं। (पञ्चजना अदितिः) पांच प्राण, जो जगत् के जीवन-हेतु, वे भी आपके रचे और आपके भी नाम हैं। (जातमदितिः) वही एक चेतन ब्रह्म आप सदा प्रादुर्भूत हैं। और सब कभी प्रादुर्भूत कभी अप्रादुर्भूत (विनाशभूत) भी हो जाते हैं (अदितिर्जनित्वम्) वही अविनाशीस्वरूप ईश्वर आप सब जगत् का 'जनित्वम्'-जन्म का हेतु हैं और कोई नहीं।।

सम्पादकीय

"दीर्घकाल नैरन्तर्य.....।

हम सभी भली-भांति जानते हैं कि-यह संसार परिवर्तनशील है, सुख-दुःख से परिपूर्ण है, और आशा-निराशा की वृत्तियों का खेल है। मानव की इच्छा, अभिलाषा पूर्ण हो जाय, तो वह प्रसन्न हो जाता है, नाचता है, झूमता है। यदि इच्छाओं की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाय तो मानवीय प्रवत्ति के अनुसाार दुःख के सागर में डूब जाता है। कुछ लोग असफलता से निराश होकर अवसादग्रस्त हो नष्ट हो जाते हैं, और कुछ धैर्यशील, मननशील मानव ऐसे होते हैं, जो असफलता के भयानक भंवर में फंसकर भी प्रयत्नशील बने रहते हैं, परिश्रम करते रहते हैं, और फिर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उन्नति के शिखर पर पहुँचते हैं। इसी सफलता को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने को तत्पर साधक जब शीघ्र प्राप्ति की कामना करता है, तब योगदर्शनकार ऋषि पतञ्जलि उपदेश करते हैं-**"दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितोदृढ़भूमिः"** अर्थात् हे साधक! लम्बे समय तक निरन्तरता के साथ श्रद्धापूर्वक लगे रहने पर ही भूमि दृढ़ होगी, सफलता मिलेगी। उपदेश उपासना में लगे उपासक के लिए है, पुनरपि इसे जीवन के सभी क्षेत्रों में हम लागू कर सकते हैं, विद्या प्राप्ति, बल की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, राज्य की प्राप्ति आदि सभी कर्म इसी से सिद्ध होते हैं, और तभी सफलता मिलती है।

हम सभी ने वर्तमान के राजनैतिक परिवर्तन में यह अनुभव किया, और देखा है कि-जो कांग्रेस पार्टी आजा़दी की प्राप्ति के उपरान्त से सर्वाधिक शासन में रही, और शासन को अपना स्वाभाविक अधिकार मानकर चल रही थी, उसकी कैसी दुर्दशा हुई, और जिस प्रमुख विपक्षी दल भा.ज.पा. को अनेकों दलों के साथ से मिली सत्ता पिछले दश वर्षों से दूर दिखाई देने लगी थी, वह कैसे सत्ता के शीर्ष पर पहुँच गये। प्रधानमंत्री बनने से पूर्व श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने सांसदों को चेताते हुए संसद के केन्द्रीय कक्ष में ठीक ही कहा था "कोई यह न समझे कि-यह जीत हमारे कारण, हमारी योजना के कारण, हमारी चुनावी रणनीति आदि के कारण मिली है, इस सफलता के लिए पीढ़ियां खफी हैं, 1951 से अर्थात् जनसंघ की स्थापना से न जाने कितने कार्यकत्ताओं, नेताओं, पदाधिकारियों का श्रम, त्याग और बलिदान हुआ है, तब हमें आज सफलता मिली है" श्री मोदी जी ने राजनैतिक कारणों से भले ही 1951 से इसका प्रारम्भ कहा हो लेकिन वास्तविकता तो यह है कि-भाजपा की इस सफलता की कहानी का प्रारम्भ सन् 1925 में विजयदशमी के दिन से हुआ था, जब डाक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जी ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की थी। संघ ने 89 वर्ष के इस कालखण्ड में किसी मौलिक दार्शनिक विचारधारा के अभाव में भी मध्यमार्ग से छोटे-छोटे सकारात्मक समाजोत्थान के कार्य करते-करते, विभिन्न सामाजिक दृष्टिकोण से शताधिक अनुषांगिक संगठनों का निर्माण कर, अबाध कार्य किया और राजनीति के शिखर पर अपने राजनैतिक संगठन को पहुँचा दिया, परिश्रम सब ने किया, पसीना सभी ने बहाया और शिखर पर कुछ ही लोग पहुँचे। इसमें जो अड़चनें, बाधाएं, महत्वकांक्षाएं, पद, प्रतिष्ठा की उत्कट अभिलाषा थीं उन सभी का मिल-बैठकर शमन कर लिया गया, और अन्ततः सफल हो गये। होना भी चाहिए था, परिवर्तन आवश्यक था।

पं. नेहरू से प्रारम्भ हुई एक गढ्ढ-मढ्ढ विचारधारा जो न भारतीय

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

थी और न विदेशी थी, न ही गांधीवादी थी और न ही गांधीवाद से रहित, न वामपन्थी और न ही वामपन्थ से दूर, को ढोते-ढोते देश थक चुका था, ऊब चुका था, आगे चलने की राह बन्द दिख रही थी कि-सहसा देश की जनता को श्री मोदी जी से आशा जगी। और इस विदेश आधारित दिशाहीन विचारधारा से देश छूटकर स्वदेशी समझौतावादी हिन्दू विचारधारा की ओर बढ़ गया, इस विचाधारा को यदि हम व्यक्ति का नाम देकर चिन्हित करें तो विवेकानन्दी विचारधारा कहना सुविधाजनक होगा। और इस प्रकार हम कह सकते हैं कि-देश गांधी-नेहरू की छाया से निकलकर संघ व विवेकानन्द की छाया में आ गया। अर्थात् गति तो प्रारम्भ हुई, परिवर्तन तो हुआ। लेकिन! साथ ही यह समझना भी आवश्यक है कि-**हमारे इस सनातन राष्ट्र की उन्नति का यह दीर्घकालिक उपाय नहीं है। यह वह उपाय भी नहीं जिससे हम पहले करोड़ों वर्षों तक अजेय अपराजेय और गौरवशाली सार्वभौम साम्राज्य चलाते थे, जो मनुष्यमात्र ही नहीं प्राणिमात्र के हित की भी रक्षा करता था।**

अतः आर्यों! आर्याओं! अब हमें और भी अधिक सन्नद्ध होना होगा, परिश्रमी और पुरुषार्थी होना होगा, सिद्धान्ततः स्पष्ट, दृढ़, और दृर्धष भी। यह भी विचारना होगा कि-जब वैचारिक रूप से समझौतावादी विचारधारा, "अनेकता में एकता" का उद्घोष करते-करते परिश्रम, पुरुषार्थ, त्याग और संगठन के बल पर मात्र 89 वर्षों में सर्वोच्च सत्ता के शिखर पर पहुँच गया, तो वैचारिक रूप से स्पष्ट, शाश्वत, आप्त, आर्ष पुरुषों की विचारधारा (दयानन्दी विचारधारा) वाले हम लोग 1875 से अनेक महान बलिदानों के उपरान्त भी ऐसा नहीं कर पाये, आखिर क्यों? क्योंकि विचार स्पष्ट हैं, बलिदान बहुमूल्य दिये हैं, लेकिन पुरुषार्थ और संगठन दोनों में हम पीछे रह गये, और इसमें भी सर्वाधिक क्षति आर्यों की संगठन के अभाव से हुई है। **149 वर्षों के इस कालखण्ड में जितना पुरुषार्थ-परिश्रम, त्याग और बलिदान ऋषि दयानन्द के अनुयायी आर्यों ने व्यक्तिगत रूप में किया, काश कि-इसका आधा भी एक संगठित योजनागद्ध स्वरूप से किया होता तो देश किसी और भी ऊंचे पायदान पर होता।** पुनरपि आर्यों! आर्याओं! अब भी आशा के साथ, सकारात्मक भावना के साथ लगो, मिलकर लगो। स्वार्थ, हठ, दुराग्रह, अंहकार, पद-प्रतिष्ठा और ऐषणाओं को त्यागकर लगो। हिमालय से समुद्रपर्यन्त, पूर्वोत्तर से पश्चिमी सीमान्त तक सभी आर्य-आर्या लगो, कि-हम वेदमत की स्थापना करेंगे, हम ऋषि की आकांक्षा को पूर्ण करेंगे, हम सार्वभौम साम्राज्य की ओर बढ़ेंगे, और इससे पहले आर्य से आर्यावर्त की ओर बढ़ेंगे, एक ऐसा राजनैतिक विकल्प उपस्थित करेंगे, जो स्पष्ट विचारधारा से ओतप्रोत प्राणिमात्र के हित की कामना करने वाला, दीर्घकालिक उन्नति की ओर ले जाने में सक्षम हो। यह मत सोचो कि-सफलता कब मिलेगी? हमारे जीवनकाल में मिलेगी? कभी मिलेगी भी या मिलेगी ही नहीं? यह सब कुछ भूल जाओ और ऋषि को शिरोधार्य कर अपने कर्तव्यपथ पर घर-घरोंदे, छोटे-छोटे स्वार्थ, हठ, दुराग्रह, अंहकार, निराशादि त्यागकर एक साथ मिलकर-**"दीर्घकालनैरन्तर्य सत्कारासेवितोदृढ़भूमिः"** को लक्ष्य धरकर ऋषि पतंजलि के एक और सूत्र को भी द्दयंगम कर लो-**"तीव्रसंवेगानामासन्नः"** अर्थात् जो जितनी तीव्र आकांक्षा से सतत् निरन्तरता के साथ, श्रद्धा पूर्वक पुरुषार्थ करेगा, वह उतनी ही शीघ्रता से लक्ष्य प्राप्त करेगा। अध्यात्मिक साम्राज्य को भी और भौतिक साम्राज्य को भी।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	गुरड़िया वर्मा, तह.जावर, जि-सिहोर, मध्य प्रदेश	10-11 मई
2.	आर्य कन्या उच्च विद्यालय, भिवानी, हरियाणा	10-11 मई
3.	नालन्दा शिक्षानिकेतन व.वि. भिवानी खेड़ा कुरूक्षेत्र हरि.	10-11 मई
4.	आर्य सत्यकाम निवास, सागरपुर, दिल्ली	10-11 मई
5.	आर्यसमाज, माहरा, सोनीपत, हरियाणा	10-11 मई
6.	पिरामिड़ कोचिंग एकेडमी, बवाना, दिल्ली	17-18 मई
7.	आर्य कन्या पाठशाला, मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश	24-25 मई
8.	मूर्ति देवी आर्यसमाज, नजफगढ़, दिल्ली	24-25 मई
9.	आर्यसमाज, बिजनौर, उत्तर-प्रदेश	24-25 मई
10.	आर्यसमाज, नांगलोई, दिल्ली	31मई,1जून
11.	गांव-बुपनियां, जिला-झज्जर, हरियाणा	31मई,1जून
12.	अभय सरस्वती हाईस्कूल, सिहोर, मध्य प्रदेश	31मई,1जून
13.	आर्यसमाज, कुंजपुरा, करनाल, हरियाणा	31मई,1जून
14.	मीनाक्षी गार्डन, इसराना, पानीपत, हरियाणा	31मई,1जून
15.	पिरामिड़ कोचिंग एकेडमी, बवाना, दिल्ली	31मई,1जून

आर्या प्रशिक्षण सत्र

1.	आर्यसमाज बहल, जिला-भिवानी, हरियाणा	10-11 मई
2.	आर्य धर्मशाला, बावली रोड़, बड़ौत, उत्तर प्रदेश	24-25 मई
3.	गुरुकुल चितौड़ाझाल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश	31मई,1जून
4.	बाबा भयंकर चौपाल, क्योडक, कैथल, हरियाणा	31मई,1जून
5.	खंडेलवाल धर्मशाला, जुरेहड़ा, भरतपुर, राजस्थान	01-02 जून

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www.aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

उत्तम क्वालिटी के ओ३म् ध्वज व आर्यावर्त्त हवन सामग्री की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

आर्य मार्किट, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक

-सम्पर्क सूत्र- 9466904890

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	13 जून	दिन-शुक्रवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-ज्येष्ठा
अमावस्या	27 जून	दिन-शुक्रवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-आर्द्रा
पूर्णिमा	12 जुलाई	दिन-शनिवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा
अमावस्या	26 जुलाई	दिन-शनिवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पुनर्वसु

ऋषि दयानन्द के जीवन के प्रेरणास्पद प्रसंग

स्वामी दयानन्द के जीवन में अनेकों ऐसी घटनाएं हैं जो हमें प्रेरणा देती हैं और उनकी विद्वता व ज्ञान का परिचय भी देती हैं। इन घटनाओं से हम न केवल सिद्धान्त का परिचय प्राप्त करते हैं अपितु वे हमारे लिए प्रेरणा स्रोत भी हैं।

स्वामी दयानन्द की सत्य आधारित वाक्पटुता

1. एक दिन बहुत-से मनुष्यों ने मिलकर विचार किया कि स्वामीजी सबका मुख बन्द कर देते हैं। उनपर कोई ऐसा प्रश्न करो, जिससे एक बार तो उनको भी नीचा देखना पड़े। वहां सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि कल पूछा जाये कि आप ज्ञानी हैं अथवा अज्ञानी? यदि वे कहें कि मैं ज्ञानी हूँ तो उनको कहा जाय कि महापुरुष अंहकार नहीं किया करते, और यदि वे अपने को अज्ञानी कहें, तो उनसे कहा जाय कि जब आप स्वयं अज्ञानी हैं तो हमें क्या समझायेंगे?

आगामी दिन जब यह प्रश्न स्वामी जी से किया गया तो उन्होंने तत्काल उत्तर दिया कि "मैं कई विषयों में ज्ञानी हूँ और कईयों में अज्ञानी। वेद-शास्त्रादि विषयों में पूर्ण ज्ञानी हूँ और फारसी, अरबी और अंगरेजी आदि विषय मैं नहीं जानता, इसलिये उनमें अज्ञानी हूँ। यह उत्तर पाकर प्रश्नकर्त्ता लोग हक्के-बक्के रह गये और एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। उस दिन गुजरात (वर्तमान में पाकिस्तान में एक कस्बा) वासियों को निश्चय हो गया कि स्वामी जी को जीतना सर्वथा असम्भव है, उनकी तात्कालिक स्फुरणशक्ति आश्चर्यकारिणी है।

2. एक दिन स्वामीजी प्रात:काल भ्रमण कर रहे थे। मार्ग में पादरी मैकी महाशय से भेंट हो गई। नमस्कारादि के अनन्तर मैकी महाशय ने कहा-"स्वामीजी, आप ईसाई धर्म का बड़ा कड़ा खण्डन करते हैं।" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं जो कुछ सुनाता हूँ वह आपके ग्रन्थों का पाठ होता है। यदि आपकी धर्म-पुस्तकों को सुनाना खण्डन है तो ऐसा खण्डन आप भी करते हैं। द्वेषबुद्धि से कुछ नहीं कहता, और न ही अनुचित समालोचना करता हूँ।"

स्वामी जी का आर्यसमाज के लिए समर्पण

लाहौर से महाराज अमृतसर में पधारे और सरदार भगवान् सिंह के मकान में ठहरे। पण्डितों ने इस बार भी विरोध आरम्भ कर दिया। वे शास्त्रार्थ करने के लिए उद्योग करने लगे। आर्यसमाज अमृतसर की ओर से विज्ञापन द्वारा उनको शास्त्रार्थ के लिए आहूत भी किया गया। शास्त्रार्थ करने का स्थान सरदार भगवान सिंह जी का मकान निश्चित हुआ।

उस दिन मकान में कोई छ:-सात सहस्र मनुष्य एकत्र हो गये। नगर के सभी प्रतिष्ठित पुरुष भी उपस्थित हुए। आमने-सामने दो चौकियां लगा दी गई, जिससे वादी और प्रतिवादी को प्रश्नोत्तर करने में सुगमता हो और दूसरा कोई बीच में गड़बड़ भी न कर सके।

नियत समय पर स्वामी जी जाकर कुर्सी पर विराजमान हो गये, परन्तु प्रतिपक्षियों के आने का कोई पता तक न था। बड़ी देर तक प्रतीक्षा करने पर एक व्यक्ति ने आकर कहा कि पण्डित लोग बाहर खड़े हैं और भीतर आने के लिए आज्ञा मांगते हैं। उत्तर-में कहा गया कि वे बिना संकोच, अति प्रसन्नाता से पधारें। उन्हीं की तो प्रतीक्षा करते यह समय होने को आया है।

थोड़ी देर में पण्डित-दल जय-जय-नाद गुंजाता हुआ भीतर प्रविष्ट हुआ। सात-आठ पण्डित तिलक लगाये और बगल में पुस्तक दबाये, अकड़कर स्वामी जी के सम्मुख बैठ गए। इतने में ही उनके चेले-चांटों ने चारों ओर ईट-पत्थर फेंकने आरम्भ कर दिये। सभास्थान को धूलि-वर्षा में धुआंधार बना दिया। बड़ा भारी क्षोभ उत्पन्न हुआ। ऐसे स्थान में जब पुलिस कान्स्टेबल प्रबन्ध करने के लिए आगे बढ़े तो पण्डित देवता एक-एक करके चुपके से चम्पत हो गये। उस समय भगवान् दयानन्द के भक्त अपने भक्ति-भाजन का निरादर होते देखकर, कोपावेश से शान्त न रह सके। वे चाहते थे कि उद्दण्ड और दुष्ट जनों को वहीं दण्डित किया जाय, परन्तु स्वामी जी ने उनको शान्ति प्रदान करते हुए कहा कि "मत-मदिरा से उन्मत्त जनों पर कोप नहीं करना चाहिए। हमारा काम एक वैद्य का है। निश्चय जानिये, आज जो लोग मुझपर ईंट, पत्थर और धूल बरसाते हैं, वही लोग आप पर अभी पुष्पवर्षा करने लग जायेंगे।"

जब महाराज अपने डेरे पर पधारे तो एक भक्त ने कहा, "महाराज! आज दुष्ट लोगों ने आप पर राख-धूल फेंकी और आपका घोर अपमान किया।" महाराज ने कहा, **"परोपकार और परहित करते समय अपना मानापमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता। मैंने आर्यसमाज का उद्यान लगाया है। इससे मेरी अवस्था एक माली की है। पौधों में खाद डालते समय, राख और मिट्टी माली के सिर पर भी पड़ जाया करती है मुझपर राख-धूल चाहे जितनी पड़े, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं। परन्तु वाटिका हरीभरी बनी रहे और निर्विघ्न फूले-फले।"**

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी का सम्मान

दिनांक 31.03.2014 नवसृष्टि संवत्सर, युगाब्द और विक्रमी संवत् २०७१ के प्रथम दिन चैत्रमास, शुक्ल प्रतिपदा के दिन, आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित विश्व की प्रथम आर्यसमाज, काकड़वाड़ी मुम्बई में "राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा" के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी (वरिष्ठ-अधिवक्ता), प्रधान-आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक को सम्मानित किया गया। यह सम्मान आचार्य जितेन्द्र जी के नेतृत्व में "राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा" द्वारा सन् 2004 से अनवरत संचालित "आर्य प्रशिक्षण सत्र" द्वारा आर्य क्रान्ति के अभियान के लिए किया गया जिससे आर्य निर्माण-राष्ट्र निर्माण का अद्भुत कार्य तीव्रगति से आगे बढ़े। सम्मान से पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा-मुम्बई ने आर्यसमाज-वासी व नवी मुम्बई के माध्यम से दो बार सत्रों का आयोजन किया, एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह आर्य जी के साथ लगभग सभी सभासद् तथा पदाधिकारी दोनों सत्रों में उपस्थित रहे। सम्मान समारोह आर्य क्रांति के उद्भावक आचार्य परमदेव मीमांसक जी के सान्निध्य में और प्रधान श्री मिठाईलाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मान समारोह के विशिष्ठ अतिथि आचार्य वागीश जी एवं आचार्य डॉ. सोमदेव जी मुम्बई रहे। दोनों विद्वानों ने आर्य निर्माण के सतत् अभियान की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं सहयोग का आश्वासन भी दिया। (आर्यवार्ता)

आर्योन्नति के मूल स्रोत

–आचार्य अशोकपाल

मानव इतिहास साक्षी है कि सम्पूर्ण विश्व के किसी भी शब्दकोष में 'आर्य' से अधिक गरिमामय कोई शब्द नहीं है। आर्यों ने उन्नति की ऐसी पराकाष्ठा को अर्जित किया था कि करोड़ों वर्षों तक सम्पूर्ण भूमण्डल पर चक्रवर्ती साम्राज्य की व्यवस्था की। शताब्दी भर पूर्व तक तो अज्ञानतावश अथवा उपनिवेशवाद के वशीभूत हो ऐसा प्रचारित एवं प्रसारित किया जाता रहा कि ऐसा कोई उपलब्ध तथ्य ही नहीं है। पर विज्ञान की उन्नति ने ये प्रमाणित कर दिया है कि बिना बुद्धि के व्यवस्था का होना असम्भव है। और बुद्धि, विवेक का वर्धन भौगोलिक परिवर्तनों अथवा समयानुसार स्वत: नहीं होता अपितु मनुष्योत्पति के प्रारम्भ से ही ज्ञान, बुद्धि, विवेक एवं विचार की उपलब्धता अनिवार्य है। अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ से ही हमारे पूर्वज अपने विहित एवं निषिद्ध कर्मों से परिचित थे तथा उन्हीं तर्कसंगत, बुद्धिगमय मानवीय नियमों की दृढ़तापूर्वक अनुपालना उनकी उच्चता का कारण रही है।

सृष्टि के प्रारम्भ से लगभग 5000 वर्ष पूर्व पर्यन्त ऐसा अनवरत चलता रहा। महाभारत युद्ध में क्षत्रियों की अति हानि से व्यवस्था चरमरा गई और आज ऐसी अवस्था को प्राप्त हुये कि आर्य जीवन मूल्यों के अनुसार करोड़ों वर्षों तक जीवनयापन करने वाले अपने ही नाम से कतराने लगे हैं। ऐसी अवस्था में यह विचारणीय विषय है कि आर्योन्नति का मूल स्रोत क्या है, जिसे सींचकर मनुष्यता एवं प्राणिमात्र का रक्षण एवं वर्धन किया जा सके।

इसी को दृष्टिगत रख आर्य इतिहास का अवलोकन प्रारम्भ करते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के काल में जब रावण तर्कसंगत मानवीय अर्थात् आर्य नियमों एवं परम्पराओं को छोड़ उपद्रव मचा रहा था एवं हजारों-हजार युवाओं को भी दिग्भ्रमित कर रहा था, तब श्री राम जी ने श्री हनुमान जी की सहायता से मानवीय शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार कर रावण का विध्वंस कर दिया और श्रीलंका में विभीषण, आर्य पूर्वजों के अनुपालक द्वारा पुन: आर्य राज की व्यवस्था की। लगभग 5000 वर्ष पूर्व जब अज्ञानता आलस्य व प्रमाद के कारण युवकों में घर कर रही थी, स्वार्थ ने अपना उल्लू सीधा करने की ठानी थी, जब कंस, जयद्रथ, शिशुपाल, दुर्योधन सरीखे कुलघातक, गौत्रहत्यारे, आर्य सिद्धान्तों की अवमानना कर एवं करा रहे थे। आर्य परम्पराओं के विरूद्ध आचरण एक शैली बन चुका था, तब धर्म संस्थाना हेतु श्री कृष्ण जी ने पांडवों के सहयोग से पुरुषार्थ प्रारम्भ किया। राजसूय यज्ञ का आयोजन करवा कर आर्यों की परम्पराओं को सींचा। अभी पूर्ण व्यवस्थित करने हेतु प्रयासरत ही थे कि पांडवों ने ही जुये में सब चौपट कर दिया और महाभारत के युद्ध की स्थिति पैदा कर दी।

उसके बाद तो अधर्म, अनार्यत्व, अमानवीयता का वो तांडव हुआ कि राक्षस, पिशाच शब्द भी छोटे पड़ गये। मानवता त्राहि-त्राहि कर उठी। फिर भी बीज रूप में कहीं-कहीं गुरुकुलीय व्यवस्था में आर्यों के जीवन, सिद्धान्तों एवं परम्पराओं का रक्षण हो रहा था। शासकों ने जब उसे दग्धबीज करने का प्रयास किया और सिकन्दर सरीखे बाहरी कबीलाई आक्रमणकारी भी खुरापात मचाने लगे तब आचार्य चाणक्य ने मानवता को मानसिक पराभवता से बचाने का सफल उपक्रम रचा।

पर छली-कपटी, दम्भी-स्वार्थी, अमानुषिक आक्रमणकारियों एवं मानवताघातियों ने विद्या, शिक्षा, सभ्यता-संस्कृति की जड़ों को कुरेदना जारी रखा। अब तो शास्त्रों की होली खेली गई, शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन होने लगे। सदियों से धन, वैभव, समृद्धि के भूखे दरिन्दों ने उन्नति के मूल स्रोत को नकारते हुये शोषण एवं उत्पीड़न शुरू कर दिया। इससे आर्थिक बदहाली का वो युग शुरू हुआ कि मानवता आज तक भी उबर नहीं पाई है। आर्य सभ्यता-संस्कृति, इतिहास के विरूद्ध सुनियोजित षड़यन्त्र रचा गया, जिससे आर्य सिद्धान्तों के रक्षक ही भक्षक बनने लगे और अपने ही नाम, प्रकल्पों, जीवन मूल्यों, इतिहास को हेय दृष्टि से देखने लगे।

ऐसी विकट परिस्थिति में ऋषि दयानन्द ने आर्य सभ्यता-संस्कृति का शंखनाद किया। अपने अनथक एवं अनवरत पुरुषार्थ से आर्योन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। उनके तर्कयुक्त प्रमाणों का प्रतिफल है कि आज मानवता शारीरिक स्वतंत्रता को भोग रही है। पर आज भी मानसिक स्वतंत्रता के लिये मानवता यहां-वहां भटक रही है। इसका कारण यही है कि ऋषि द्वारा गठित आर्य समाज आर्य सिद्धान्तों, मूल्यों, परम्पराओं को धरालत पर न ला सका। जिनको मार्ग प्रशस्त करना था वो ही मझधार में खो गये और पुन: आर्य सभ्यता-संस्कृति, परम्पराओं पर कुठाराघात प्रारम्भ हो गया। आर्य द्रोही, ऋषि द्रोही, गोत्रहत्यारे, मानवता के शोषक, उत्पीड़क जनता की भावनाओं को भड़काकर सिद्धान्तों में घालमेल करते रहे हैं, सियार प्रवृति के भीतरघाती भेड़िये तो आर्य समाज की ही सर्वोच्च संस्थाओं पर कब्जा किये हुये हैं। उन्हें ऋषि सिद्धान्तों पर संशयरहित विश्वास ही नहीं है, पालन कैसे हो? आर्य परम्पराओं के विरुद्ध साधु, संन्यासी, महात्मा, बाबागण, स्वार्थ के वशीभूत हो दशकों से संस्था के सिंहासनों से चिपके हुये हैं और दीमक की तरह आर्य समाज को भीतर ही भीतर खोखला कर रहे हैं। जनता मानवीय शिक्षा के अभाव में सिद्धान्त न जानने के कारण इनकी असलीयत समझ ही नहीं पाती है। बिना समझे समाधान एवं आर्योन्नति कैसे सम्भव है?

आर्योन्नति के मूल स्रोत को जानकर ही आर्य सभ्यता-संस्कृति, परम्पराओं का संवाहक बना जा सकता है। इतिहास में किये गये प्रयासों की समानता हमें आर्योन्नति के मूल स्रोत तक पहुँचा सकती है। आओ विचारते हैं। पहली समानता यह है कि प्रत्येक काल में आर्य सभ्यता संस्कृति के संवाहक, जीवन मूल्यों के अनुपालक, धर्म-संस्थापकों के प्रयास एवं पुरुषार्थ स्वयं पूर्णरूपेण संशय रहित रहे हैं।

श्री रामजी वसिष्ट ऋषि के आश्रम में, श्री कृष्ण जी की संदीपन ऋषि के आश्रम में, चाणक्य वंशानुगत परम्परा एवं तक्षशिला में, ऋषि दयानन्द स्वयं के घोर पुरुषार्थ एवं दण्डी स्वामी विरजानन्द द्वारा प्रदत्त विद्या से संशय रहित होते हैं। पर आज संशयरहित कैसे हों, और बिना संशय को दूर किये उन्नति असम्भव है। गीता में भी लिखा है "संशयात्मा विनश्यति" अर्थात् संशय होने से सब नष्ट हो जाता है, इसीलिये युवाओं को स्वयं संशय रहित होना होगा। अपनी तर्कबुद्धि से कर्त्तव्याकर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, विद्या-अविद्या, ठीक-गलत का निर्णय करना होगा। युवाओं को राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा आर्य प्रशिक्षण सत्रों के आयोजन द्वारा निर्णयात्मक स्थिति तक पहुँचाने का प्रयास करती है। इसके बाद सत्यार्थ-प्रकाश एवं ऋषि दयानन्द द्वारा विरचित ग्रन्थ संशय को दूर करने में विशिष्ट सहयोगी हैं। आर्योन्नति के आकांक्षी प्रत्येक युवा को संशयरहित होने के लिये बहुअधीत एवं बहुश्रुत बनना होगा। ऐसा प्रत्येक आर्य युवक का परमधर्म भी है। जैसा कि आर्य समाज के नियमों में भी स्पष्ट है कि वेद अर्थात् मानवीय सिद्धान्तों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है।

दूसरी समानता यह दृष्टिगोचर होती है कि सभी संवाहकों, धर्म संस्थापकों, मानवता के रक्षकों ने अनथक एवं अनवरत पुरुषार्थ किया है। श्री राम जी ने बनवास के चौदह वर्ष में सुनियोजित ढंग से हैवानियत का सफाया किया, पर कभी शिथिल न हुये। और अन्तत: अपने लक्ष्य को अर्जित किया। श्री कृष्ण जी भी विभिन्न कष्टों, बाधाओं, आक्रमणों को झेलते हुए धर्म-संस्थापना के ध्येय को पूरा करने के लिये सदा आरूढ़ रहे। ऐसा ही पुरुषार्थ हमें आचार्य चाणक्य द्वारा देखने को मिलता है। ऋषि दयानन्द का विपतियों को झेलना, बाधाओं को पार करना तो किसी से छिपा नहीं है और अन्तत: मानवता के रक्षण, आर्योन्नति के लिये ही वे बलिदान हो गये।

वर्तमान में आर्यसमाज के कार्य में संलग्न किसी भी पदाधिकारी, बाबा, महात्मा, साधू, संन्यासी में यह गुण दिखाई नहीं पड़ता। बिना ब्राह्मण बने ही, बिना विद्वता ग्रहण किये ही लालवेश धारण करने की होड़ तो दिखाई पड़ती है। कौन सारी

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ 4 का शेष

उम्र पाश्चात्य शिक्षा को ग्रहण कर कब अग्निरूपधारक कर ले, पता ही नहीं चलता है। सत्य न्याय के सिद्धान्त पर आरूढ़ हुये कोई मिलता ही नहीं, कोई स्थानीय नेताओं का चाटुकार दिखाई पड़ता है तो अन्य केन्द्रीय सत्ताओं की दलाली करता है। हो भी क्यों न, सत्य सिद्धान्तों पर आरूढ़ होने की शक्ति बिना ईश्वरीय उपासना के अन्यत्र कहां ? और जब संशय है तो उपासना कैसे?

अनवरत पुरुषार्थ वही है जो आस्तिक अर्थात् ईश्वर को ठीक-ठीक जानता, ठीक-ठीक मानता और ठीक-ठीक विधि से उसी की उपासना करता है। इसीलिये युवाओं को अनवरत उपासना को नित्य कर्म का अंग बनाना ही होगा, वो भी पूर्ण अष्टांग योग की विधि से, अन्यथा हम भी वर्तमान के आर्य नेता, आर्य अग्रणी कहे जाने वालों की भांति कब शिथिल होंगे पता भी नहीं चलेगा। पूर्ण एवं दृढ़ आस्तिक बनकर ही हम श्री राम जी व श्री कृष्ण जी सरीखे पुरुषार्थ को कर सकेंगे और आर्य सिद्धान्तों की स्थापना कर प्राणिमात्र को सुख देंगे।

कर्मक्षेत्र में भी सतत् बुद्धि, विवेक, विचार एवं सावधानी एवं मनन और सत्यग्राह्यता की आवश्यकता होगी अन्यथा न जाने कब सब कुछ पांडवों की भांति चौपट कर बैठें। पांडवों के इस कृत्य-कर्म ने मानवता एवं प्राणिमात्र को बहुत दु:ख पहुँचायें हैं और आज भी इससे मुक्ति नहीं मिली है। सतत् विवेक एवं सत्यग्राह्यता ही हम सब युवाओं का आर्योन्नति में हमारा मार्ग प्रशस्त करेगी।

सतत् संशयरहित अनवरत पुरुषार्थ, सदैव सत्याग्रही होते हुये भी हमारा प्रयास विशेष रूप से युवाओं को समर्पित हो तो उन्नति तीव्रता से प्राप्त होगी। आर्यसमाज का इतिहास भी इसका प्रमाण है। गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज लाहौर कॉलेज में पढ़ते थे जब लाला साईदास हॉस्टल में युवाओं को मानवीय सिद्धान्तों और परम्पराओं की प्रेरणा के लिये जाया करते थे। राम प्रसाद बिस्मिल भी आर्य विद्वान के प्रभाव में आ दुर्धष आर्य बना था जिसने 1857 के स्वतन्त्रता समर के बाद पहली बार एच.आर.ए. हिन्दोस्तान रिपब्लिकन ऐसोशियेशन के रूप में शोषण एवं उत्पीड़न के विरूद्ध बिगुल बजाया था।

वर्तमान में आर्य समाजें, आर्य संस्थायें, आर्य संगठन लगभग सभी या तो असहाय, शिथिल दो-चार लोगों की उदरपूर्ति अथवा स्वार्थपूर्ति का साधन बने हुये हैं या हठयोग को लागू कर, ऋषि द्रोही बन दल-दल में फंसे हुये हैं। अब तो आस सुदृढ़-सशक्त आस्तिक युवाओं से ही है। वे युवाओं के भीतर तीव्र गति से आर्य सिद्धान्तों का आधान करेंगे। ऋषि प्रणाली के अनुसार आर्योन्नति के मार्ग में अनावश्यक बाधा उत्पन्न न हो, इसके लिये हमें स्कूलों, कॉलेजों, तकनीकी संस्थानों, अन्य व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, विश्व विद्यालयों में तर्क, बुद्धि, विवेक, विचार, सत्यग्राह्यता के इन मानवीय सिद्धान्तों को तीव्र गति से पहुँचाना होगा। अन्यथा मानव संसाधन मात्र व्यवसायिक शिक्षा का शिकार बनते रहेंगे और उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि बढ़ती आयु के साथ कब मानसिक गुलाम बन गये। सभी आर्य युवा अपने कर्मक्षेत्र से सभी हॉस्टलों, स्कूलों, कॉलेजो में प्रयास करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब पुन: युवाओं को आर्यवंशी होने पर गर्व होगा। यही गर्व की अनुभुति आर्योन्नति की गति को नई ऊँचाई प्रदान करेगी। यही मानवता एवं प्राणिमात्र के दु:ख उत्पीड़न एवं शोषण का एकमात्र समाधान है। ऐसा न करने पर दिग्भ्रमित, नास्तिक युवा शक्ति कुलघातक ही बनती है।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	सैनी धर्मशाला, सफीदों रोड़, जीन्द, हरियाणा	07-08 जून	आर्य विनोद	9728510899
2.	दयानन्द इन्टर कॉलेज, उग्रपुर, जि.सहारनपुर, उत्तर प्रदेश	07-08 जून	आर्य सोमपाल	7830115554
3.	प्रताप स्कूल, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा	07-08 जून	आर्य प्रदीप	9991996275
4.	मस्कट पब्लिक स्कूल, गांव-नाथौड़, बिजनौर, उत्तर प्रदेश	07-08 जून	आचर्य संजीव	9412486428
5.	ओम् कॉम्पलेक्स, डाबडा रोड़, हिसार, हरियाणा	07-08 जून	आर्य कृष्ण	9416796468
6.	देवयानी इन्टरनेशन स्कूल, बेवल, कनीना रोड़, महेन्द्रगढ़, हरियाणा	07-08 जून	आर्य राजेन्द्र	9968139502
7.	आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा	07-08 जून	आर्य वेदप्रकाश	9416147217
8.	आर्यसमाज गांव-जैणी, जिला-करनाल, हरियाणा	07-08 जून	आर्य राजकुमार	9416368474
9.	महर्षि दयानन्द इन्टर कॉलेज, दूधली, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.	07-08 जून	आर्य ओमवीर	9808689542
10.	गांव-दुलहेड़ा, जिला-झज्जर, हरियाणा	14-15 जून	आर्य अशोक	9416865581
11.	गांव-गोदीवाली, जिला-फतेहाबाद, हरियाणा	14-15 जून	आर्य यशवीर	9991899899
12.	माध्यमिक विद्यालय, बन्धुहली, थाना-बहेड़ी, दरभंगा, बिहार	14-15 जून	डॉ. कृष्ण आर्य	9939710762
13.	राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गांव-बुहावी, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	14-15 जून	आर्य जोनी	9316042516
14.	दयानन्द बाल विद्यालय, बड़ौत, बागपत, उ.प्र.	14-15 जून	आर्य उपेन्द्र	8923939693
15.	आर्यसमाज, भच्छी, थाना-बहेड़ी, दरभंगा, बिहार	18-19 जून	प्रधान इन्द्रनारायण ठाकुर	7631486222
16.	गुरुकुल चितौड़ाझाल, मुजफ्फनगर, उ. प्र.	21-22 जून	आर्य नरेन्द्र	9719940999
17.	आर्य महाविद्यालय, किरठल, बागपत. उ.प्र.	21-22 जून	आर्य उपेन्द्र	8923939693
18.	आर्य शिक्षा सदन, न्यू विकास नगर, लोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	28-29 जून	आर्य मनोज	9716318840
19.	गांव-छारा, जिला-झज्जर, हरियाणा	28-29 जून	आर्य विरेन्द्र	9812279168
20.	आर्यसमाज करनाल रोड़, कैथल, हरियाणा	28-29 जून	आर्य बलकार	9467088290
	आर्या प्रशिक्षण सत्र			
1.	आर्यसमाज टीकरी बागपत, उ.प्र.	14-15 जून	आर्य सत्यवीर	8923530785
2.	स्वामी विवेकानन्द पब्लिक स्कूल, नन्दी गार्डन, लोनी गाजियाबाद	14-15 जून	आर्य जयसिंह शास्त्री	9873226252
3.	आर्य महाविद्यालय, किरठल, बागपत, उ. प्र.	28-29 जून	आर्य सत्यवीर	8923530785

यम-नियमों की सार्वकालिक उपयोगिता

-आचार्य सतीश

मानव समाज के प्रारम्भ से अनेक लोगों ने, समाज का मार्गदर्शन करने वालों ने इस प्रकार के नियम-उपनियम समाज को दिए हैं जो मनुष्य के जीवन व समाज को व्यवस्थित करने में सहायक हैं। संसार भर में अनेक दार्शनिकों, चिन्तकों, विचारकों, सुधारकों, मानवतावादियों, आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शकों, समाज का नेतृत्व करने वालों ने अनेकों ऐसी व्यवस्थाएं दी हैं जो मनुष्य व समाज को व्यवस्थित करके उनके सुख, उन्नति, समृद्धि व समरसता को बढावा देने का प्रयास है। हर व्यक्ति जो थोड़ा भी विचार करता है वह ऐसी कोई न कोई उक्ति अवश्य जानता व बताता है कि समाज व व्यक्ति की उन्नति का क्या उपाय हो सकता है। इसी दृष्टिकोण से हमारे ऋषियों-मुनियों, आर्ष विचारकों व दार्शनिकों ने भी इस प्रकार की व्यवस्थाएं यम-नियमों के माध्यम से समाज को देने की व्यवस्था की है जिससे एक व्यक्ति व समाज का जीवन व्यवस्थित हो सके।

अब यदि हम विचार करें कि हमारी आर्ष परम्पराओं, वैदिक विचार धारा में वे कौन सी व्यवस्थाएं है, कौन से नियम हैं, कौन सी बाते हैं जो इस उद्देश्य से हमारे ऋषियों के द्वारा दी गई हैं। और क्या वे नियम-उपनियम पूर्णता लिए हुए हैं या उनमें और सुधार की आवश्यकता है, क्योंकि कुछ समान्य बाते हैं जिन्हें सामान्यता सभी स्वीकारते हैं या उनमें से ही कुछ को विशेषतया मानते हैं जैसे-दया, परोपकार, अहिंसा, सत्य, नैतिकता, ब्रह्मचर्य, आस्तिकता, समरसता, भाईचारा, नम्रता, निडरता, स्पष्टता, सहयोग आदि गुण तथा लोभ, क्रोध, मोह, अहंकार, हिंसा, कर्मठता, ईर्ष्या, कृतध्नता, चोरी, कपटता, झूठ, कायरता, निट्ठलापन, उग्रता, नास्तिकता आदि अवगुणों से दूर रहने का संदेश देते हैं।

सभी मतों के चलाने वालों ने भी इसी प्रकार से गुणों को धारण करने व अवगुणों को छोड़ने के अपने-अपने मापदण्ड स्थापित किए हैं।

आइए, अब इस बात पर विचार करते हैं कि कोई ऐसे नियमादि भी हैं जहां एक साथ ही इन सभी तथा अन्य गुण व अवगुणों की चर्चा सम्मिलित हो जाती है, जिसके अनुसार गुणों को धारण करने और अवगुणों को छोड़ देने से न केवल व्यक्ति का जीवन अपितु समाज की व्यवस्थाएं भी इस रूप से बन जाती हैं कि उन्नति, सुख, समृद्धि व समरसता स्थापित हो सके। और विचार करने पर ऐसी व्यवस्था को संचालित करते दृष्टिगोचर होते हैं यम-नियम, जो उपरोक्त लक्ष्य को पूरा कर सकते हैं। और यम-नियम दिए हैं ऋषि पतञ्जलि द्वारा योग-दर्शन में। ऋषि पतंजलि जो न केवल ऋषि थे, मुनि थे, आध्यात्मिक नेता थे, सुधारक थे, मानवतावादी थे, अपितु सम्पूर्ण वैदिक विचारधारा के सागर में से मोती स्वरूप हमें में यम-नियम देने वाले थे। ये यम-नियम इस क्षेत्र के लिए (समाज व व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित करना) सम्पूर्ण वैदिक विचार धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये यम व नियम ऐसे दिशा निर्देश हैं जिनको अपनाने के उपरान्त अन्य किसी सुधारक, दार्शनिक, मानवतावादी विचारक, चिन्तक, मत-पथ के सिद्धान्त, नियम-उपनियम व दिशा-निर्देशों की आवश्यकता नहीं रह जाती है। इनके सभी सिद्धान्त इन्हीं में सम्मिलित हो जाते हैं।

ये यम-नियम शाश्वत हैं, ये सार्वकालिक दिशा-निर्देश प्रत्येक मानव के लिए उपयोगी हैं, प्रत्येक समाज के लिए उपयोगी, प्रत्येक समस्या के समाधान के लिए उपयोगी हैं। ये यम-नियम आज के समय में ज्यादा उपयोगी हैं क्योंकि आज समाज में अव्यवस्था ज्यादा है, व्यक्ति का जीवन ज्यादा अव्यवस्थित है, ज्यादा भाग-दौड़ है, ज्यादा मानसिक दबाब है, ज्यादा संघर्ष है-जीविका के लिए, स्वस्थ रहने के लिए, सम्बन्धों को बनाए रखने के लिए। इसलिए ये यम-नियम आवश्यक हैं आज की युवा पीढ़ी के लिए, प्रौढ़ों के लिए, विद्यार्थियों के लिए, अधिकारियों के लिए महिलाओं के लिए चाहे वे काम-काजी हैं या घरेलू हैं, चाहे गांव में हैं, चाहे शहर में हैं क्योंकि उपरोक्त समस्याएं ऐसी हैं जिनसे अधिकांश व्यक्ति ग्रसित हैं। अतः इन दिशा-निर्देशों का समझना, जानना, अपनाना सबके लिए आवश्यक है।

अव्यवस्थित जीवन व्यवस्थित हो जाता है तो वह एक क्रांतिकारी परिवर्तन होता है। जैसे किसी परिवार में झगड़ा है, लोगों में व्यग्रता है, एक-दूसरे के प्रति अविश्वास है, रोग है, परस्पर में ईर्ष्या है, एक-दूसरे के प्रति दूसरे को हानि पहुँचाने तक के स्तर की प्रतियोगिता है, अब यदि इसके स्थान पर शान्ति हो, परिवार के सदस्यों के व्यवहार में स्थिरता हो, एक-दूसरे के प्रति पूर्ण विश्वास हो, सभी स्वस्थ हों, एक-दूसरे के सहयोगी हों, तो क्या यह क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं होगा। जीवन को बदल देने वाला परिवर्तन नहीं होगा?

यही सामर्थ्य है यम-नियमों के पालन में। हमारी वैदिक संस्कृति के सभी अंग इसी प्रकार आज की स्थिति में आमूल-चल परिवर्तन लाने में सफल हो सकते हैं। आज भी उतने ही उपयोगी हैं ये सिद्धान्त, ये मान्ताएं, ये परम्पराएं, ये दिशा-निर्दश जो ऋषियों द्वारा हमें दिए गए।

व्यक्तित्व के निर्माण के लिए आवश्यकता है इन यम-नियमों की, शान्ति व धैर्यपूर्वक जीवन जीने के लिए आवश्यकता है इन यम-नियमों की। क्या व्यक्तित्व के निर्माण की, धैर्यपूर्वक जीवन की आज भी उतनी ही आवश्यकता नहीं है जितनी पहले हुआ करती थी। इसीलिए ऋषि पतंजलि ने यह एक ऐसी व्यवस्था दे दी जो आज के समाज व व्यक्ति के जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। ये सिद्धान्त वेद के आधार पर हमारी परम्पराओं में प्रारम्भ काल में ही रहे हैं परन्तु ऋषि पतंजलि ने इन्हें हमारे लिए संकलित और व्यवस्थित किया है, इसके लिए ऋषि पतंजलि का विशेष उपकार हम पर है।

और ये यम-नियम जहां एक और पूर्ण उपासना पद्धति का एक अंग है बिना इनके आध्यात्मिक मार्ग पर प्रशस्त नहीं हुआ जा सकता, वहीं समाज व व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित करने का एक सम्पूर्ण साधन भी हैं। अर्थात् जहां एक और एक सम्पूर्ण व्यवस्था देते हैं वही दूसरी और एक वृहत् लक्ष्य के मार्ग का महत्वपूर्ण पड़ाव भी हैं। केवल ऐसा नहीं, आधुनिक काल की समस्याएं जैसे अवसाद, अशान्ति, भ्रष्टाचार, व्यभिचार आदि को भी यम-नियमों का पालन करके दूर किया जा सकता है।

तो आइए यह विचार करते हैं और जानते हैं कि यम-नियम क्या हैं, क्या इनका उपयोग हैं, और क्यों हमारी हर समस्या का समाधान इनसे हो सकता है। इतना तो निश्चित है कि इनका प्रावधान योगदर्शनकार ने हमारे उत्थान लिए किया है। उसके बाद से ही अनेक लोगों ने इन्हें अलग-अलग रूप में अपनी आवश्यकता के अनुसार अपनाया है तथा अन्यों को भी प्रेरित किया है चाहे वे इसका श्रेय योगदर्शनकार ऋषि पतंजलि को दें या न दें, लेकिन मूल वही है।

योगदर्शनकार पांच यम बतलाते हैं जो इस प्रकार है **अहिंसासत्यअस्तेयब्रह्मचर्यपरिग्रहयमाः** अर्थात् यम पांच है- १. अहिंसा २. सत्य ३. अस्तेय ४. ब्रह्मचर्य ५. अपरिग्रह। इसी प्रकार पांच नियम हैं **शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः** अर्थात् पांच नियम हैं- १. शौच २. सन्तोष ३. तप ४. स्वाध्याय ५. ईश्वरप्रणिधान।

ये दस दिशा-निर्देश, जिनका कि वेदों में आदेश है और उसी आधार पर ऋषि पातन्जलि ने इन्हें संकलित करके हमें दिया है। ये दस दिशा-निर्देश ऐसे हैं जो हमें वैदिक जीवन पद्धति पर चलाते हैं।

अब अगर हम अपने चिन्तन को और विस्तृत करें तो देखेंगे कि यमों के पालन से जहां मुख्य रूप से समाज में व्यवस्थाएं सुधरती हैं, वहीं गौण रूप से व्यक्ति को उत्थान की ले जाती हैं व आत्मिक उत्थान का माध्यम हैं। वही नियमों के पालन से मुख्य रूप से जहां व्यक्ति का जीवन श्रेष्ठतम बनाता है व उसे उसके जीवन के परमलक्ष्य की ओर अग्रसर करता है वहीं गौण रूप से समाज का हित-साधन भी होता है।

अब इससे आगे यम-नियमों की एक-एक करके चर्चा करेगें कि किस प्रकार ये वर्तमान में उपयोगी हैं।

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

इस शिविर में आकर मुझे कुछ वर्षों बाद पून: आर्य होने एवं गुण कर्म स्वभाव एवं अपने वैदिक धर्म, कर्त्तव्य का बोध हो गया है मैं अंदर ही अनुभव करता था कि आर्य समाज की ऊर्जा कम क्यों हो रही हैं क्योंकि मैंने आर्य की शिक्षा अपने बड़े भाई से ले ली थी जब मैं 10 वर्ष का था और उसके कई वर्षों तक मैंने आर्य समाज के काम बड़े उत्साह से देखा और किया परन्तु कुछ वर्षों से मुझे इसकी शक्ति कमजोर होती दिखी जिससे मुझे बहुत दु:ख हुआ । मेरे मन में राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत हुई हैं।

सहयोग हमेशा रहेगा ।

संदीप आर्य, आयु-35 वर्ष, योग्यता- एम.कॉम.
कार्य- डेयरी, स्टेट हाउस रोड़ गल्ला मंडी सीहोर, मध्यप्रदेश

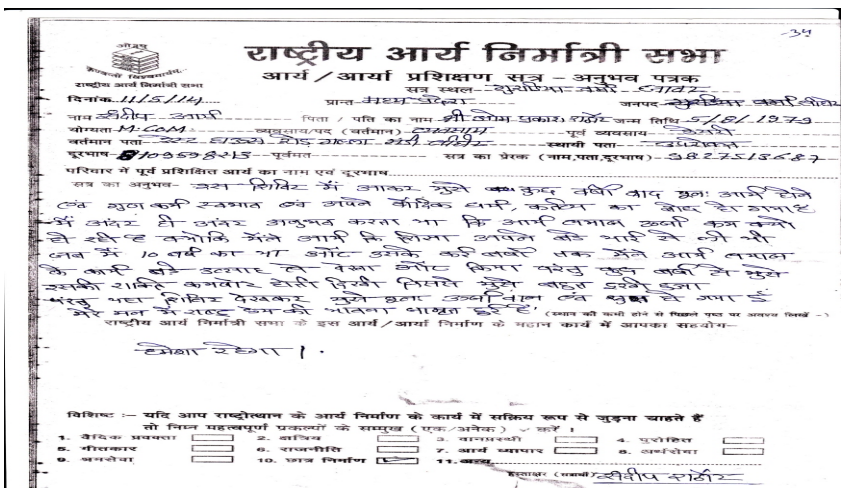

हमें बहुत अच्छा लगा पहले मैं ईश्वर को मानती थी पर कैसा है, क्या गुण हैं, और क्या हमसें चाहता है, क्या उसका संविधान है? ये सब एक प्रश्न ही थे मेरे मस्तिष्क में। पर इस सत्र के जरिए मैं सब जान गई। मेरा विचार बिल्कुल बदल गया है। मैं ऐसा सत्र दुबारा भी लगाना चाहूंगी और ये मेरा सौभाग्य होगा। मैं दिल से आभार व्यक्त करती हूँ और सभी को आर्या बनाने का प्रण भी करती हूँ।

खुशबु, योग्यता-एम.एस.सी.
निवास-बहल,भिवानी, हरियाणा

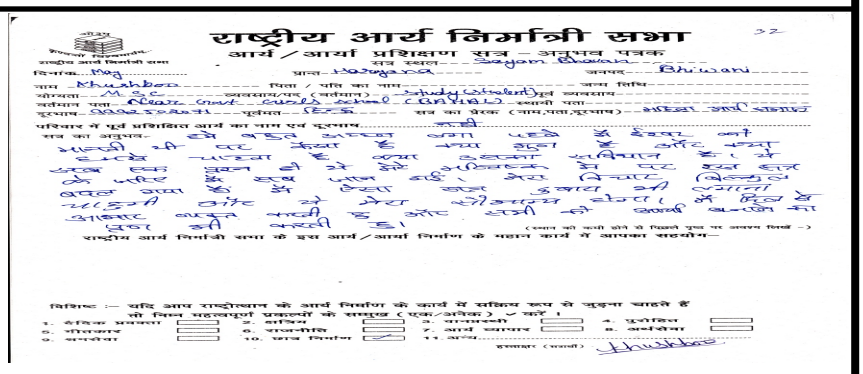

सत्र में आने से पहले भगवान के बारे में विचारों को बिल्कुल बदला हुआ महसूस किया। देश व धर्म के बारे में विचारों में भी परिवर्तन हो गया। पहले जीवन का उद्देश्य मौज-मस्ती और सुख सम्पदा का इक्कठा करता था पर अब अपने देश और राष्ट्र के लिये कार्य करने का संकल्प ले रहा हूँ। इस सत्र में आने के बाद में आर्य निर्माण के लिये मैं अपने साधनों और सामर्थ्य के अनुसार इस आंदोलन में अपने आपको समर्पित करता हूँ।

सुनिल शर्मा, आयु-36 वर्ष, योग्यता-एम.ए.
पद- अध्यापन, निवासी-सनेहडी खालसा, जिला-कुरूक्षेत्र, हरि.

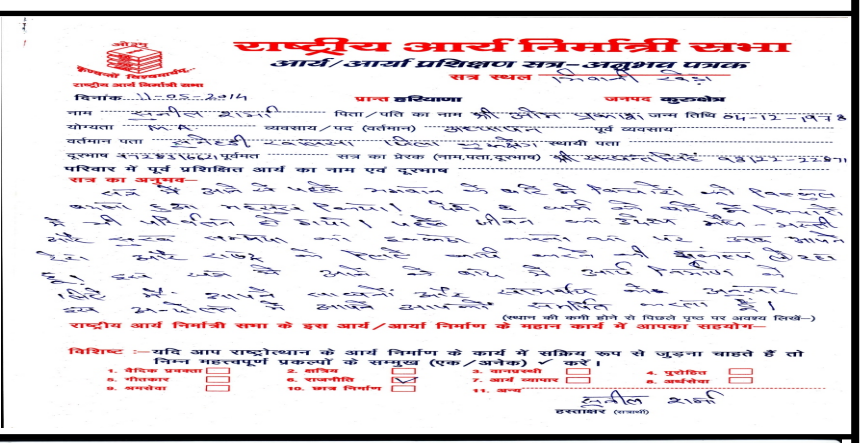

मुझे यहां आकर बड़ा आनन्द आया। मैं पहले पूजा-पाठ में विश्वास रखता था। किसी भी असहाय की सहायता करता था। पूर्व चली आ रही रूढ़ीवादी परम्पराओं को मानता था। परमात्मा का कोई रूप है। भूत-प्रेत होते हैं, मैं हिन्दू होने पर गर्व करता था। मैं पीर-फकीरों में विश्वास रखता था। माता-पिता के कहने पर वहां जाता था। मन्दिर हमारी शान है ऐसा मानता था, वेदों में इतना ज्ञान निहित है पता नहीं था। मुझे अपने वास्तविक स्वरूप का पता नहीं था।

पर यहां आकर मुझे अपने सारे प्रश्नों का उत्तर मिल गया। अब मैं स्वतन्त्र हो चुका हूँ। मेरी अब अपनी बुद्धि, विवेक है। आज से मैं हर निर्णय अपने विवेक से लूंगा। किसी भी रूढ़िवादी परम्परा को नहीं मानूंगा। माता-पिता द्वारा कही गई हर बात को नहीं मानूंगा। उनको वेद की कसौटी पर तोलूंगा सही है तो ठीक है अन्यथा नहीं मानूंगा। वेद में निहित ज्ञान मेरे जीवन का आधार रहेगा और उसी पर चलूंगा। मैंने छोड़ दी हैं सभी गली-सड़ी परम्पराएं। मैं अब आर्य हूँ और अपने परिवार व समाज को भी इसी राह पर लाकर रहूंगा। यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

सुशील कुमार, आयु-31 वर्ष, योग्यता-एम.एस.सी.,एम.एड.
पद-अध्यापक, निवासी-गांव-साहनपुर,त.सफीदों (जीन्द)

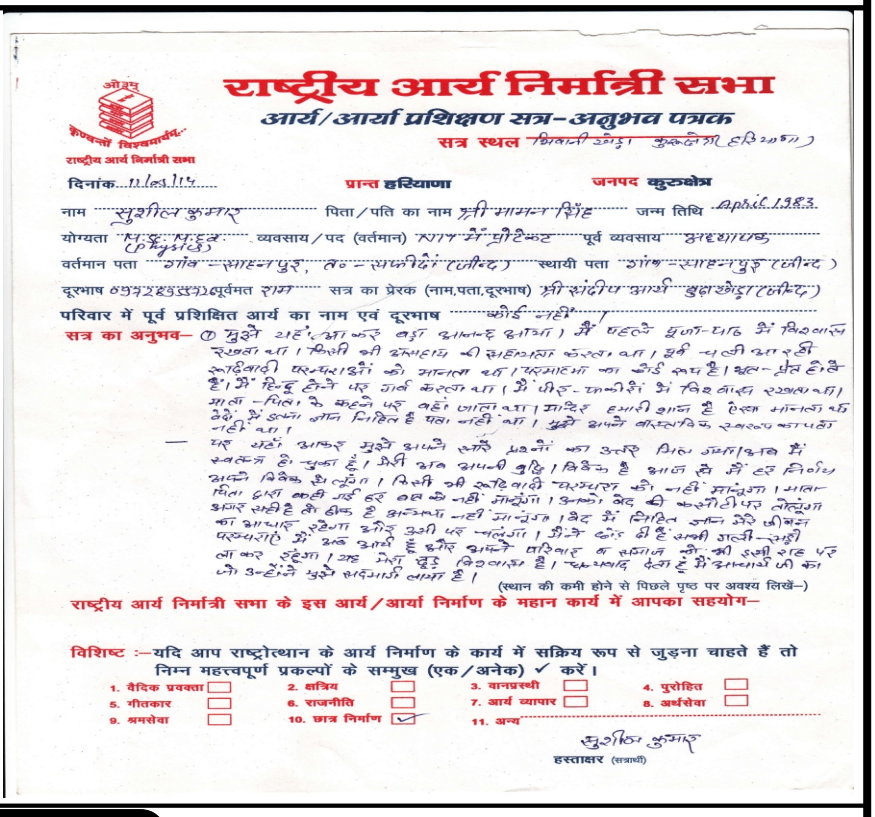

संध्या काल

ज्येष्ठ मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(15 मई 2014 से 13 जून 2014)
प्रात: काल: 5 बजकर 00 मिनट से (5.00 A.M.)
सांय काल: 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

आषाढ़ मास, वर्षा ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(14 जून 2014 से 12 जुलाई 2014)
प्रात: काल: 5 बजकर 00 मिनट से (5.00 A.M.)
सांय काल: 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
जून 2014

श्रद्धेय आचार्य परमदेव मीमांसक जी का सन्देश

निरन्तर संघर्ष, पुरुषार्थ व लक्ष्य की प्राप्ति

एक मनुष्य असफलता के भय से कभी कार्य प्रारम्भ ही नहीं करता है। उसे हर एक कार्य में पराजय का भय ही दिखाई पड़ता है। एक युवा जब विद्वान् बनना चाहता है तो उसे शास्त्रार्थ में पराजित होने का भय सताता रहता है। मुख्यतः यह अपमान का भय होता है कि इससे बड़ा भारी अपमान होगा। एक बलवान को हार जाने का भय बना रहता है कि लड़ूँगा तो कहीं हार न जाऊँ, इसलिए वह कभी लड़ता ही नहीं है। एक धनवान सोचता है कि व्यापार करुँगा तो कहीं नुकसान न हो जाये, घाटा न हो जाये इसलिए वह व्यापार करने का खतरा ही नहीं उठाता है। विद्वान्, बलवान, धनवान पराजित होने के भय से आगे बढ़ता ही नहीं है। सम्भावनाओं से भी बचता रहता है।

जो विद्वान् नहीं, बलवान नहीं, धनवान नहीं है और यह सोचने लगे कि विद्वान् आदि बन गये तो भी पराजय का भय लगा रहेगा, इसलिए विद्वान् आदि ही नहीं बना जाये, तो क्या आप उसे बुद्धिमान मानेंगे? एक यह सोचकर कि विद्वान् बनना कठिन कार्य है, विद्वान् बनने का प्रयत्न ही नहीं करता है। अपने सामर्थ्य का आकलन करके बलवान कहता है कि भगवान ने मुझे सामर्थ्य ही कम दी है।

एक अति उत्साह में विद्वान् बनने का प्रयत्न करता है, परन्तु आधे में ही छोड़ देता है, हिम्मत छोड़ देता है। जो प्रयत्न ही नहीं करता है और जो प्रयास करके आधे में ही छोड़ देता है डरता नहीं है, अपितु जीतने की भूख बहुत है, बल कम है, लड़ता है, हारता है, हार कर भी अनुभव अर्जित करता है और बल बढ़ाता रहता है। बताओ कौन सफल होगा?

निसन्देह हारने से भी न डरकर लड़ते रहने वाला। पूर्ण बल को अर्जित करते रहने की प्रतीक्षा करने वाला अनुभव से शून्य होगा, मानसिक बल कम होगा और हारेगा तथा हारता है यह अनुभव सिद्ध है।

संसार में बिना खतरा उठाये आप किसी कार्य को पूर्ण नहीं कर सकते हैं। जीवन को भी दांव पर लगाकर लोग प्रयत्न करते हैं, कुछ सफल हो जाते हैं कुछ असफल हो जाते हैं लेकिन असफलता को देखकर लोग प्रयत्न करना नहीं छोड़ते हैं अपितु असफल होते हुए भी अन्ततः सफलता की दुदुम्भि बजा देते हैं। ऐसे लोग ही इतिहास बनाते हैं, जिनको पढ़कर लोग प्ररेणा ग्रहण करते हैं।

अपनी रक्षा और विजय के लिए लाखों लोगों का बलिदान देकर भी सफल होना करोड़ों के लिए बड़ी उपलब्धि है। हाथ पर हाथ धरे बैठे हुए करोड़ों लोगों के लिए यह आत्महत्या है कि उस सफलता/पराजय के भय से तथा बलिदान से डरकर शान्त रह जायें।

युवाओ! बुजुर्गों! संघर्ष करो, परिस्थिति एवं सामर्थ्य का आकलन अवश्य करो, परन्तु पराजय के भय से रुको नहीं, संघर्ष करते हुए पराजित होना आत्महत्या नहीं है, परन्तु हार के भय से संघर्ष ही न करना आत्महत्या से भी बढ़कर है और हार कर जो रुक गया वह तो विनष्ट हो ही गया। एक योद्धा कहता है कि हार, जीत की भूख को कई गुना बढ़ा देती है, फिर वह हार को जीत में आसानी से बदल लेता है। योद्धा की जीत तो लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ बढ़ा ही देती है। इसलिए इन तथ्यों पर विचारो, चिन्तन करो समर में कूदो, अनुभव अर्जित करो, जीतो एवं लक्ष्य की तरफ बढ़ो।

आर्य प्रशिक्षण सत्र (10-11 मई) जावर सिहोर, मध्य प्रदेश में आचार्य राजेश जी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।